दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR with ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
MODERN HISTORY
Congress
Part -8
LIVE
16-07-2024 04:00 PM

क्रांतिकारी घटनाएं

कांग्रेस पूर्व राजनीतिक संगठन → कांग्रेस → 1885 – 1905 (उदारवादी) / → 1905 – 1917 (उग्रवादी)

राजनीतिक चेतनाएं -

⇒ युवा क्रांति का मार्ग अपनाता है।
⇒ साधन - परिवहन एवं संचार साधनों में विकास।
⇒ प्रेस के विकास ने भी राजनीतिक चेतनाओं में भूमिका निभायी।
⇒ मध्यम शिक्षित वर्ग का उदय।
⇒ विदेशी घटनाएं।

क्रांतिकारी घटनाएं

प्रथम चरण की क्रांतिकारी घटनाएं

① इनका मानना यह था कि अंग्रेज इसलिए शोषण करते हैं, क्योंकि हम उनका प्रतिकार नहीं करते।
② भारत में प्रत्येक प्रकार के शोषण के पीछे अंग्रेज उत्तरदायी हैं।
③ इन्होंने स्वराज प्राप्ति हेतु क्रांति का रास्ता अपनाया।
④ बम और पिस्तौल की राजनीति अपनायी।
⑤ बदनाम अंग्रेज प्रशासकों को अपना लक्ष्य बनाया।
⑥ ये घटनाएं देश के साथ - साथ विदेशों में भी हुयी।

दूसरे चरण की क्रांतिकारी घटनाएं

① ये समाजवादी विचारों से प्रभावित थे।
② संवैधानिक तरीकों से अपनी मांगों को उठाते थे और हिंसा को अंतिम शस्त्र के रूप में स्वीकार करते थे।
③ ये शिक्षित वर्ग से सम्बंधित हैं।

⇒ क्रांतिकारी घटनाओं के तीन मुख्य केन्द्र थे।
① बंगाल
② पंजाब
③ महाराष्ट्र

Digvijay Sir GS

महाराष्ट्र में क्रांतिकारी घटनाएँ :-

- 22 जून 1897 को पूना प्लेग समिति के कमिश्नर रेण्ड एवं अधिकारी एमहर्स्ट की चापेकर बंधुओं ने गोली मारकर हत्या कर दी। यह आधुनिक भारत की पहली राजनीतिक हत्या मानी जाती है।
- 18 अप्रैल 1898 को चापेकर बंधुओं को फांसी दे दी जाती है।
- चापेकर बंधु -
- दामोदर हरि चापेकर, बालकृष्ण हरि चापेकर।
- इन्होंने पूना में व्यायाम मंडल की स्थापना की।
- ये क्रांतिकारी संस्था हिन्दू धर्म संघ से जुड़े थे।
- महाराष्ट्र में तिलक की प्रेरणा से एक क्रांतिकारी संस्था आर्य बांधव समिति की स्थापना की।
- तिलक ने मराठा में अंग्रेजों की प्लेग नीति की आलोचना की, जिस कारण उन्हें 18 माह की सजा सुनायी गयी।
- 1904 में विनायक सावरकर द्वारा अभिनव भारत समाज नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की गई।
- 21 दिसम्बर 1909 को अनन्त लक्ष्मण कन्हारे जी के द्वारा नासिक के जिला मजिस्ट्रेट की हत्या कर दी गई। (जैक्सन)
- जैक्सन की हत्या के आरोप में विनायक देश पाण्डे, कृष्ण जी गोपाल कार्वे, अनन्त लक्ष्मण कन्हारे को 19 अप्रैल 1911 को फांसी दे दी गई। इसे ही नासिक षड्यंत्र के नाम से जाना जाता है।
- विनायक दामोदर सावरकर के साथ 37 आरोपियों के ऊपर नासिक षड्यंत्र केस चलाया गया था।
- क्रांतिकारी संगठन – मित्र मेला, अभिनव भारत समाज।

बंगाल में क्रांतिकारी घटनाएँ :-

- बंगाल की पहली क्रांतिकारी संस्था अनुशीलन समिति है। (कलकत्ता की अनुशीलन समिति)
- स्थापना – 24 मार्च 1903
- संस्थापक सदस्य – पी. मित्रा, भूपेन्द्र नाथ दत्त, बारिन्द्र घोष।
- ढाका की अनुशीलन समिति
- संस्थापक – पुलिन दास
- आत्मोन्नति समिति –
- संस्थापक – विपिन बिहारी गांगुली।

Digital Sir GS

कुछ अन्य क्रांतिकारी संस्थाऐं / समितिया -

① सुहृदय समिति, साधना समिति - मायमेन सिंह
② स्वदेश बांधव समिति - बारीसाल

क्रांतिकारी पुस्तक / पत्र - पत्रिका :-

① बंदीजीवन - सचिन्द्र सन्याल
② संध्या - ब्रह्मबांधव उपाध्याय
③ वंदेमातरम - अरविंदो घोष।
④ युगान्तर काल - भूपेन्द्र दत्त
⑤ भवानी मंदिर - वारिन्द घोष (क्रांतिकारियों के लिए अनिवार्य पुस्तक)

⇒ हेमचन्द्र दास कानूनगों अपनी सम्पत्ति बेचकर पेरिस गयें, वहां से रूसी क्रांतिकारियों सें बम बनाने का फॉर्मूला सीखा और मणिकतल्ला में इन्होंनें बम बनाने का कारखाना स्थापित किया।

⇒ मुजफ्फरपुर का बदनाम प्रशासक किंग्स फोर्ड के काफिले पर बम फेका गया। इस घटना को अंजाम देने वाले दो क्रांतिकारी थे।

① खुदीरामबोस - ये युगान्तर के सदस्य थे, पकड़े गये एवं सबसे कम उम्र में फासी पर चढ़ने वाले शहीद बने।
② प्रफुल्ल चाकी - इन्होंने गोली मारकर आत्महत्या कर ली।

⇒ इस घटना में किंग्स फोर्ड बच निकला परन्तु मिस्टर कैनेडी, उनकी पत्नी और पुत्री मारे गये।

अलीपुर षड्यंत्र केस :-

① यह केस अरविंदो घोष सहित 34 लोगों पर चला।
② इसमें सरकारी गवाह नरेन्द्र गोंसाईं था, जिसकी कन्हैयालाल दत्त और सत्येन्द्र नाथ बोस ने गोली मारकर हत्या कर दी। बाद में इन दोनों को फांसी दे दी गयी।

क्रांतिकारी घटनायें

विदेशों में क्रांतिकारी घटनायें :-

(1) श्याम जी कृष्ण वर्मा -

⇒ विदेशों में क्रांतिकारी घटनाओं का प्रचार-प्रसार करने का श्रेय 'श्याम जी कृष्ण वर्मा' को जाता है।

⇒ 1905 में लंदन में इंडियन होमरूल सोसाइटी की स्थापना की। इंडियन सोशलिस्ट नामक पत्रिका निकाली।

⇒ लंदन में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इंडियाहाउस की स्थापना की।

⇒ मदनलाल धींगरा एवं वीडी सावरकर इसी संस्था से जुड़े हुये थे। श्याम जी कृष्ण वर्मा के पेरिस चले जाने पर इसकी अध्यक्षता वीडी सावरकर ने की।

⇒ 1 जुलाई 1909 को लंदन में धींगरा ने भारत राज्य सचिव कर्जनवाइली की गोली मारकर हत्या कर दी।

(2) मैडम भीकाजी कामा -

⇒ "क्रांतिकारियों की जननी" कहा जाता है। जो पेरिस में रहकर अपनी गतिविधियों का संचालन करती थी।

⇒ जर्मनी के स्टुटगार्ड में द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में इन्होंने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया।

⇒ इसी सम्मेलन में इन्होंने पहली बार भारतीय तिरंगा फहराया, जिसकी डिजाइन एवं उन्होंने तैयार की थी।

⇒ जेनेवा में 'वंदेमातरम' नामक मासिक पत्र भी निकाला।

⇒ इन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत दादा भाई के निजी सचिव के रूप में की।

गदर पार्टी (1913):-

⇒ नवम्बर 1913 में सोहन सिंह भाकना ने सैनफ्रांसिस्को में "हिन्द एसोसिएसन ऑफ अमेरिका" की स्थापना की।

⇒ साप्ताहिक पत्र गदर - जो उर्दू भाषा में प्रकाशित होता था।
- → पंजाबी
- → गुजराती
- → हिन्दी प्रकाशित

⇒ गदर पत्रिका के नाम पर ही इस संगठन का नाम गदर पार्टी पड़ गया।
⇒ अन्य संस्थापक सदस्य – लाला हरदयाल, रामचन्द्र
1915 – राजा महेन्द्र प्रताप सिंह ने जर्मनी के सहयोग से अफगानिस्तान में अंतरिम सरकार की स्थापना की। वे स्वयं इस सरकार में राष्ट्रपति व बरकुतुल्ला प्रधानमंत्री बने।

कामागाटामारू की घटना (1914)

⇒ कामागाटामारू प्रकरण 1914 में हुआ। यह कनाडा में भारतीयों के प्रवेश से संबंधी विवाद था।
⇒ कामागाटामारू प्रकरण का विवरण सेडिशन कमेटी की रिपोर्ट और जेम्स कैम्पबेल की पुस्तक "भारत में राजनीतिक चर्या" में मिलता है।
⇒ कनाडा – सरकार ने एक ऐसा अप्रवासी कानून बनाया था, जिसके अन्तर्गत केवल वही भारतीय कनाडा जा सकता था, जो भारत से सीधे कनाडा आया है।
⇒ यह कानून बहुत कठोर था क्योंकि उस समय कोई ऐसी नौपरिवहन व्यवस्था नहीं थी, जिससे भारतीय सीधे कनाडा पहुँच सके।
⇒ नवम्बर 1913 में कनाडा की सर्वोच्च अदालत ने एक निर्णय के तहत ऐसे 35 भारतीयों को कनाडा में प्रवेश की अनुमति दे दी जो सीधे भारत से कनाडा नहीं आये थे।
⇒ इस निर्णय से प्रोत्साहित होकर कामागाटामारू के नेता गुरदीत सिंह ने 'कामागाटामारू' नामक एक जहाज को किराए पर लेकर 376 यात्रियों के साथ हांगकांग से वैंकूवर की ओर प्रस्थान किया।
⇒ गुरदीत सिंह अमृतसर पंजाब के रहने वाले थे। वह सिंगापुर तथा मलाया में ठेकेदारी करते थे।
⇒ गुरदीत सिंह ने जर्मन शिपिंग एजेन्ट मि॰ भूने के माध्यम से 'कामागाटामारू' नामक जापानी जहाज भाड़े पर लिया था।
⇒ याकोहामा में संयुक्त राज्य अमेरिका के दो भारतीय क्रांतिकारी भगवान सिंह और बरकतुल्ला जहाज पर आए और यात्रियों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध बगावत करने की सलाह दी।
⇒ अमेरिका में रह रहे भारतीय – भगवान सिंह, बरकतुल्ला, रामचन्द्र और सोहन सिंह ने यात्रियों के सम्बंध में आंदोलन चलाया।

→ कामागाटामारू जहाज के बैंकुवर पहुँचने से पूर्व ही कनाडा सरकार ने इसके प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया। परिणामस्वरूप बैंकुवर तट पर पहुँचे यात्री पुलिस की घेराबंदी के कारण नीचे नहीं पहुँच सके।

→ यात्रियों के अधिकारों की लड़ाई के लिए हुसैन रहीम, सोहनलाल पाठक और बलवन्त सिंह के नेतृत्व में शोर कमेटी गठित की गयी।

→ 23 जुलाई 1914 को कामागाटामारू बैंकुवर से रवाना हुआ। सितम्बर के अन्त में कलकत्ता पहुँचा और 29 सितम्बर 1914 को बजबज (कलकत्ता) में लंगर डाल दिया।

→ जहाज के बजबज पहुँचने पर क्रुद्ध यात्रियों और पुलिस के बीच संघर्ष हुआ, जिसमें 18 यात्री मारे गये और 202 यात्रियों को जेल में बंद कर दिया गया।

क्रांतिकारी आतंकवादी आन्दोलन का द्वितीय चरण

→ 1922 में गांधी जी द्वारा अचानक असहयोग आन्दोलन के स्थगन से देश के उत्साही युवकों का मोह भंग हो गया। वे अब गांधी जी के अहिंसात्मक संघर्ष की रणनीति से असन्तुष्ट थे। अधिकांश युवकों ने यह मान लिया कि केवल हिंसात्मक तरीके से ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है।

→ रूस, चीन, आयरलैण्ड, तुर्की और मिस्र की क्रांति से प्रेरित होकर ये युवा हिंसा के द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ फेकने के लिए कटिबद्ध हुये।

→ युगान्तर और अनुशीलन नामक बंगाल की क्रांतिकारी पुरानी संस्थाओं को पुनर्जीवित किया गया।

→ क्रांतिकारी आतंकवाद की दो धारायें विकसित हुयी एक पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार में और दूसरी बंगाल में।

उत्तर भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन

देश में उचित ढंग से क्रांति का संचालन करने के उद्देश्य से अक्टूबर 1924 में युवा क्रांतिकारियों ने कानपुर में एक सम्मेलन बुलाया तथा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की। इसके संस्थापक - शचीन्द्र सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल, जोगेश चन्द्र चटर्जी तथा चन्द्रशेखर आजाद थे।

⇒ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ने 1925 में रिवोल्यूशनरी नामक एक पर्चा निकाला जिसमें रूस की तरह भारत में सशस्त्र क्रांति का आह्वान किया गया था।

› सचीन्द्र सान्याल द्वारा लिखित पुस्तक 'बन्दी जीवन' ने युवाओं को क्रांति के लिये आकर्षित किया।

⇒ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशिएशन के प्रमुख कार्यकर्ताओं में योगेश चन्द्र चटर्जी, सचीन्द्र सान्याल, राम प्रसाद बिस्मिल, सुरेश चन्द्र भट्टाचार्य, विष्णु शरण दुबलिश, राजेन्द्र लाहिणी, अशफाक उल्ला खाँ और रोशन सिंह प्रमुख थे।

› हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशिएशन के प्रमुख उद्देश्य –

i) रव क्रान्ति के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ना

ii) एक संघीय गणतंत्र (संयुक्त राज्य भारत) की स्थापना करना

iii) आंदोलन को सफल बनाने के लिये शस्त्र और धन एकत्र करने के लिए राजनैतिक डकैतियाँ करना।

⇒ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशिएशन ने धन इकट्ठा करने के उद्देश्य से काकोरी में पहली बड़ी घटना की।

⇒ राम प्रसाद बिस्मिल ने यह विचार पेश किया कि राजनीतिक डकैतियों का उद्देश्य सरकारी धन प्राप्त करना मात्र होना चाहिए।

⇒ हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन द्वारा 9 अगस्त 1925 को उत्तर रेलवे के लखनऊ सहारनपुर संभाग के काकोरी नामक स्थान पर 8 डाउन ट्रेन पर डकैती डालकर सरकारी खजाना लूट लिया। यही घटना 'काकोरी काण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है।

⇒ काकोरी काण्ड मे दस क्रांतिकारियों ने भाग लिया था जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिणी, अशफाक उल्ला खाँ, सचीन्द्र सान्याल, मुकुंदीलाल, मन्मथनाथ गुप्त, चन्द्रशेखर आजाद, मुरारीलाल शर्मा, भगत सिंह और बनवारी लाल थे। काकोरी काण्ड में सरकार ने 29 लोगों को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया, जिसमें अशफाक उल्ला खाँ, राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह और राजेन्द्र लाहिणी को फांसी दे दी गयी। सचीन्द्र सान्याल को आजीवन कारावास की सजा हुई तथा चन्द्रशेखर आजाद फरार हो गये।

Dr Vijay Sir GS

⇒ काकोरी काण्ड के अभियुक्त - राजेन्द्र लाहिड़ी को गोंडा जेल में, रोशन सिंह को इलाहाबाद जेल में रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में तथा अशफाक उल्ला खाँ को फैजाबाद जेल में फांसी दी गयी

⇒ काकोरी काण्ड के बाद पुलिस द्वारा चलाये गये दमन चक्र के फलस्वरूप हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशिएसन का अस्तित्व कुछ समय के लिए समाप्तप्राय हो गया था।

⇒ कुछ समय बाद विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, जयदेव कपूर (उ०प्र०), भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा तथा सुखदेव (पंजाब) ने चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में एच० आर० ए० हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन को पुनः संगठित करने का कार्य शुरू किया।

⇒ 9-10 सितम्बर 1928 को फिरोजशाह कोटला मैदान (दिल्ली) में चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में एक बैठक हुयी जिसमें एच० आर० ए० का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशिएसन (एच० एस० आर० ए०) रखा गया।

⇒ इस संगठन में सोशलिस्ट शब्द नौजवानों के अंदर समाजवाद की बढ़ती लोकप्रियता का सूचक था।

⇒ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ने बम बनाने के कारखाने स्थापित किए। बम बनाने में सहायता के लिए यतीन्द्र नाथ दास को कलकत्ता से बुलाया गया।

⇒ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का अन्तिम लक्ष्य स्वाधीनता प्राप्त करना था और समाजवादी राज्य की स्थापना करना था।

⇒ साइमन कमीशन के विरोध प्रदर्शन के दौरान स्कॉट की लाठी के आघातों से लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गयी थी। एच० एस० आर० ए० के क्रांतिकारियों ने स्कॉट को मृत्यु दण्ड देने का निर्णय किया। किन्तु स्कॉट के धोखे में पुलिस अधिकारी सांडर्स की हत्या कर दी गयी।

⇒ इस कार्य को 17 दिसम्बर 1928 को भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरू ने अंजाम दिया था।

⇒ सांडर्स की हत्या एच० एस० आर० ए० द्वारा की गई पहली क्रांतिकारी घटना थी।

⇒ एच० एस० आर० ए० के दो सदस्य भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल 1929 को केन्द्रीय विधान सभा में उस समय बम फेंके जब

ट्रेड डिसप्यूट बिल और सेफ्टी बिल पर बहस चल रही थी। इसका उद्देश्य सरकार को डराना मात्र था।

⇒ केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंकते समय ही पहली बार भगत सिंह ने इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा दिया था।

i) इन्कलाब जिन्दाबाद मुहम्मद इकबाल ने प्रादुर्भुत किया था, किन्तु इसे नारे के रूप में चर्चित भगतसिंह ने बनाया था।

ii) इस बम के साथ फेके गये पर्चे में एच॰एस॰आर॰ए॰ ने सन्देश दिया था "बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए।"

⇒ भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर केन्द्रीय एसेंबली बम काण्ड के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया। बाद में एच॰एस॰आर॰ए॰ के अन्य सदस्यों को गिरफ्तार कर कुल 16 क्रांतिकारियों के ऊपर लाहौर षडयंत्र काण्ड के अन्तर्गत मुकदमा चलाया गया।

⇒ जेल में इन क्रांतिकारियों के साथ साधारण कैदी की भाँति - व्यवहार किया जा रहा था। फलस्वरूप नौजवानों ने भूख हड़ताल शुरू कर दिया।

i) इन्हीं भूख हड़तालियों में जतिन दास भी थे जो 64 दिन की भूख हड़ताल के बाद शहीद हो गए।

ii) चन्द्रशेखर आजाद एच॰एस॰आर॰ए॰ के एकमात्र सदस्य थे जो लाहौर षडयंत्र काण्ड में भी पुलिस की गिरफ्तार से बच गए थे।

⇒ 1930 में लाहौर षडयंत्र केस के निर्णय के आधार पर भगत सिंह, राजगुरु तथा सुखदेव को फांसी की सजा हुयी। 23 मार्च 1931 को तीनों को फांसी दे दी गई।

⇒ सुखदेव को लाहौर सेन्ट्रल जेल में फाँसी दी गयी थी। सुभाष चन्द्र बोस ने भगत सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था कि भगत सिंह जिन्दाबाद और इन्कलाब जिन्दाबाद का अर्थ एक ही है।

⇒ चन्द्रशेखर आजाद जो पुलिस को चकमा देकर फरार होते जा रहे थे, अन्त में 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस मुठभेड़ के दौरान स्वयं को गोली मार ली और शहीद हो गये। चन्द्रशेखर आजाद के मरने के बाद एच॰एस॰आर॰ए॰ की गतिविधियां भी समाप्त हो गयी।

Digvijay GS